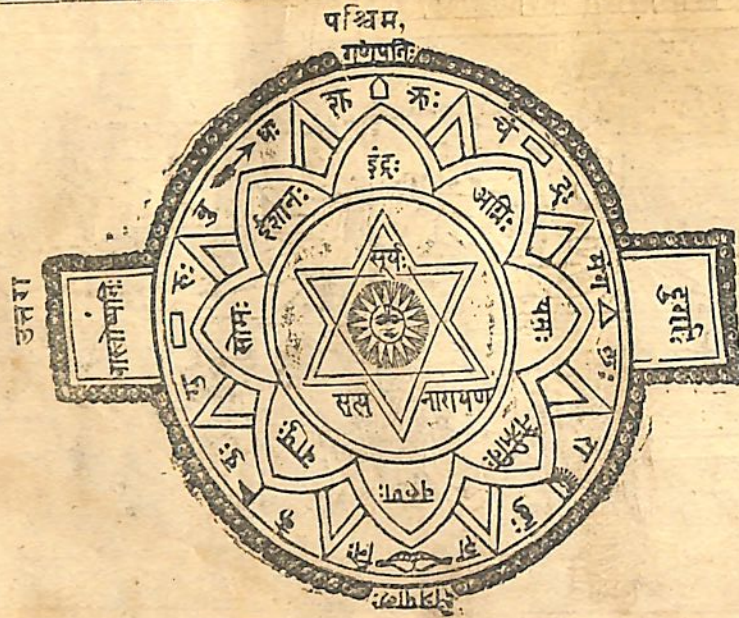
अथ सत्यनारायणकथा भाषाटीकासमेता प्रारभ्यते ।


शेषशायी

१ कदलीस्तंभाः
२ आम्रपल्लवतोरणम्
३ पंचपल्लवाः
४ सुवर्णमूर्तिः
५ कलशः
६ यज्ञोपवीतम्
७ पञ्चरत्नानि
८ वस्त्रोपवस्त्रे
९ तंडुलाः
१० कुंकुमम्
११ अबीरः
१२ गुलालः
१३ धूपः
१४ पुष्पाणि
१५ तुलसीदलानि



१६ नारिकेलफलम्
१७ तांबूलदलानि
१८ पूगीफलानि.
१९ नानाफलानि
२० माला
२१ पञ्चामृतपदार्थाः
दुग्ध, दधि, घृत, मधु, शर्करा
२२ पुण्याहवाचनकलशः
२३ भगवदर्थ पीठम्
२४ पीठम्
२५ रंगवल्ल्यर्थं रंगाः
२६ दक्षिणार्थं द्रव्यम्
२७ नैवेद्यार्थं प्रसादपदार्थाः
१। घृतं १। शकरा।
१। दुग्धं १। गोधूमचूर्णं
कदलीफलानि।



दि·
उ·रा
सा·
दि·
गो·

श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अ श्रीवृन्दावननिवासी वैष्णवश्रीमद्रंगाचार्यशिष्यनारायण शास्त्रिकृतसत्यनारायणकथाभाषाप्रारंभः ॥ श्रीकृष्णजी जिनके अंतर्यामी लाल रंग जिनको

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ आकृष्णेन रजसावर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ १ ॥

वर्तमानमनुष्योंको अमृत बांटते भये सुवर्णके रथमें बैठे चतुर्दशभुवनको देखते भये जगत्के उत्पन्न करनेवाले जो सूर्यांतर्यामी श्रीमन्नारायण जातेहैं ये जानके सूर्यनारायणकी पूजाकरै १।

सूर्यनारायणको नमस्कार है। आवाहन करें चंदन चावल पुष्प मिष्टान्न दक्षिणा में समर्पण करों हों ऐसे सब ग्रहोंकी पूजा करै॥ हे देवताओ! सबजने आपसमें सहनशील स्वभाव करो महान् क्षत्रियोंके अर्थ महान् बडोंके अर्थ महान् तेजस्वी राजाओंके निमित्त

सूर्याय नमः ॥ सूर्यमावाहयामि ॥ गन्धाक्षतपूष्पाणि समर्पयामि एवं सर्वत्र॥इमं देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेंद्रस्येंद्रियाय॥इमममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यै विशऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाꣳ राजा ॥ २ ॥

इंद्रकी इंद्रियोंके लिये इन विष्णुको और यह समुद्रसुत चन्द्रमाको याके पुत्रको श्रीलक्ष्मी जीको अपनो स्वामी जानो ये चन्द्रमाका अंतर्यामी जो श्रीमन्नारायण सो हमारो बृहत्त्वादि

गुणविशिष्टचैतन्य श्रीमन्नारायणको जाननेवारे जो ब्राह्मण उनको राजा है यासे चन्द्रमाको पूजन करे ॥ २ ॥ चन्द्रमाको प्रकाशक जो श्रीमन्नारायण ताके अर्थ नमस्कार है। अग्निमें दाहशक्तिदाता स्वर्गमें जिनको मस्तक सबके स्वामी पृथिवीके पति ये मंगलरूप होके जन्म

चन्द्राय नमः ॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाँ रेताँ सि जिन्वति ॥ ३ ॥ भौमाय नमः ॥ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयंच ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्चसीदत ॥ ४ ॥

लिया है ये मंगलके अंतर्यामी श्रीमन्नारायण जलको और अनेक प्रकारके वीर्यको उत्पन्न करनेवारे मंगलांतर्यामी हैं यासे मंगलको पूजन करे ॥ ३ ॥ मंगलके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है। तुम सबके ज्ञान देनेवारे हो सबके आगे जन्मे हो सबके करेभये

कुँवा बावडीइत्यादिकके फलदायक नीरोग करो हो इनमें सब स्थित हैं पीछेभी सब उत्तर कालमें स्थित हैं विश्वेदेवा देवता और यजमान सबकल्याणको प्राप्तहोयँ ऐसे बुधके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणकी पूजा करै॥ ४ ॥ बुधके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है

बुधाय नमः ॥ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु॥यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजाततदस्मासुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥ ५ ॥

अत्यंत कोमल पूजनीय यज्ञ करनेवारोंमें जो प्रकाशक श्रीमन्नारायण प्रकाश करतेहैं वही सबदायक हैं वही श्रीमन्नारायण बृहस्पतिके अन्तर्यामीरूप होके सबमें बसे हैं सत्यस्वरूपही तुम जन्मे हो ता कारणसे हमारेको चित्रविचित्र धन देवो ऐसे वाणीके पति बृह

स्पतिरूप श्रीमन्नारायणकी पूजा करै ॥५॥ऐसे बृहस्पतिके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणके अर्थ
नमस्कार है। साक्षात् अन्नस्वरूपसे सबकी रक्षा करे ब्रह्मरूप धारके वेदरूपरसको पिवावत
भए क्षत्रियोंको दुग्ध प्रजापतिको सोमलता कोमलवाणीकरके पिवाते भये सत्य इंद्रियेंविशेष

बृहस्पतये नमः॥अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाऽव्यपिबत्क्षत्रंपयःसोमंप्रजापतिः
ऋतेनसत्यमिंद्रियंविपान ँशुक्रमंधसऽइंद्रस्यन्द्रियमिदंपयोमृतंमधु॥६ ॥
शुक्राय नमः ॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये॥ शँयोरभिस्र
वन्तुनः ॥ ७ ॥

मान अमृतशुक्ररूप धारके शुक्रके अंतर्यामी जो नारायण इंद्रको अमृत देते भये और इंद्रियें
दुग्ध मोक्ष सहत इत्यादि देनेसे शुद्ध भगवल्लोकको प्राप्त होताहै ये जान शुक्ररूपधारी जो
श्रीमन्नारायण तिनका पूजन करै॥ ६ ॥ ऐसे शुक्राचार्यरूपधारी श्रीमन्नारायणके अर्थ

नमस्कार है ॥ शनैश्वरके अंतर्यामी जो श्रीमन्नारायण प्रकाशवान् जलशायी सो हमको मनवांछित फलकी सिद्धिके लिये होवें वही शनिरूपधारी विष्णु हमको सब प्रकार से कल्याण देवें ॥ ७ ॥ ऐसे शनैश्वररूपधारी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है सबके

शनैश्वराय नमः ॥ कयानश्चित्रऽआभूवदूती सदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठ यावृता ॥ ८॥ राहवे नमः ॥ केतुं कृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽअपेशसे ॥ समु षद्भिरजायथाः ॥ ९ ॥

स्वामी विचित्ररूपधारी सब भूमिमें व्यापक सदा वृद्धि जिनकी सबके सखा लक्ष्मीकरके सहित बैठे ऐसे राहुके अंतर्यामी जो श्रीमन्नारायण तिनकी पूजा करै ॥ ८ ॥ ऐसै राहुस्वरूप धारी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है । केतुरूपधारी सबके ध्वजानके रक्षक सुन्दर मरणरहित

अत्यन्त श्रेष्ठ चतुर सो वे विष्णु अनेक मुखोंके वचन सत्य करनेको जिन्होंने जन्म लीनो ऐसे केतुके अंतर्यामीको पूजन करै ॥९ ॥ऐसे केतुके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणके अर्थ नमस्कार है ॥ गणानांत्वा इस मन्त्रसे गणेशजीकी पूजा करे ॥ १० ॥ बृहत्त्वादिगुणविशिष्टचैतन्य

केतवे नमः ॥ गणानां त्वाइत्यनेन गणेशं पूजयेत् ॥ १० ॥ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्ताद्विसीमतःसुरुचोवेनऽआवः॥सबुध्न्याऽ उपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॥ ११ ॥

श्रीमन्नारायण सबसे पहिले ज्ञानरूपसे थे पीछे सब मर्यादा छोडके सुन्दर जिनकी कांति श्रीकृष्णजी भये सबके स्वामी हैं सो वे महाबुद्धिमान् हैं उनके बराबरकी उपमा नहीं है इनके भीतर प्रकाश कीनो सज्जन श्रीवैष्णवोंके आदिकारण असत् अवैष्णवोंके नाशक जिनको

प्रतिबिंब अर्थात् अवतार धारे ऐसे ब्रह्माके अंतर्यामी श्रीमन्नारायण तिनको नमस्कार है ॥ ११ ॥ हे विष्णु! तुम सबके मस्तक हो तुमही सबमें व्याप्त हो सबप्रत्ययोंमें स्थित हो विष्णुस्वरूपी हो व्यापक हो निश्चय करके तुम तप्तशंखचक्रधारी श्रीवैष्णव हो सबमें तुम्हि

ब्रह्मणे नमः ॥ विष्णोरराटमसिव्विष्णोःश्नप्त्रस्थोविष्णोः स्यूरसि विष्णो ध्रुवोसिवैष्णवमसिव्विष्णवेत्वा ॥ १२ ॥ विष्णवे नमः ॥ नमः शंभवायच मयोभवायच नमः शंकरायचमयस्करायच नमः शिवायच शिव तरायच ॥ १३ ॥

व्यापक हो यासे बाहर भीतर समस्त एक हो यासे तुम्है नमस्कार है ॥ १२ ॥ सबके कल्याण कारक भयनाशक दैत्यके नाशक कल्याणस्वरूप तेज करनेंवारे कल्याणरूपधारी अतिशय

करके कल्याणकारी महादेवको अन्तर्यामी जानके पूजे नमस्कार करै॥ १३ ॥ श्रीदेवी भूदेवी लीलादेवी आपकी पत्नीहैं दिनरात ये पसवाडे हैं नक्षत्र तुम्हारेही स्वरूप हैं अश्विनीकुमार तुमही करके प्रकाशितहैं ये वैकुण्ठलोक अपनेकृपाकटाक्षसे हमको देवो तैसे सब

श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥
इष्णन्निषाणमुंमऽइषाणसर्वंलोकंमऽइषाण १४ ॥ लक्ष्म्यै नमः ॥

लोकको राज्य मोको तुम देवो याकरके लक्ष्मीके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणकी पूजा करे लक्ष्मीजीके अर्थ नमस्कार है ॥ १४ ॥

अब सत्यनारायणकी पूजाके विधान लिखते हैं। व्रत करनेवारो जो पुरुष है सो संक्रांतिको पूर्णमासीको अथवा अमावास्याको वा दशमीको या चाहै जिसी किसी दिनमें सायंकालमें स्नान करके पूजाके स्थानमें आयके आसनपर बैठकर आचमन कर

अथ सत्यनाराणपूजाविधिः ॥ व्रती संक्रातौ पौर्णमास्यां च दशम्यां यस्मिन्कस्मिन्दिने वा सायंकाले स्नानंकृत्वापूजास्थानमागत्य आसन उपविश्याचम्य पवित्रधारणं कृत्वा गणेशगौरीवरुणदेवतानां प्रतिष्ठावाहनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि॰ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं

पवित्री धारण करके गणेशके अन्तर्यामी श्रीमन्नारायण गौरीके अंतर्यामी श्रीहरि वरुणान्तर्यामी श्रीविष्णुइत्यादि देवताओंकी प्रतिष्ठा आवाहन करके संकल्प करै आज या

गोत्रको यह मेरा नाम सब पापके लिये सब आपत्तिशांति पूर्वक सब मनोरथ सिद्धिके अर्थ जो सब सामग्री है ताकरके गणेश गौरी वरुण देवता गणपति इत्यादि पंचलोक-पाल देवता सूर्य्यादि नवग्रह देवता इनका पूजन विधिपूर्वक पहिले बोलेभये जो यहसत्य

सकलदुरितोपशमनसर्वापच्छांतिपूर्वकसकलमनोरथसिद्ध्यर्थं यथासंपादितसामग्र्या गणेशगौरीवरुणदेवतागणपत्यादिपंचलोकपालदेवतासूर्यादिनवग्रहदेवतापूजनपूर्वकंपूर्वांगीकृतं श्रीसत्यनारायणपूजनंकथाश्रवणं च करिष्ये॥ गणेशादिभ्योनमः ॥ अर्घ्यपाद्याचमनीयस्नानगंधाक्षतपुष्प

नारायणको व्रत तामें पूजन कथा श्रवण हम करेंगे ऐसे संकल्प करै॥गणेशादि देवताओंके अंतर्यामी श्रीमन्नारायणको नमस्कार है,अर्घ्य पाद्य आचमनीय स्नान चंदन चावल पुष्प

धूप दीप नैवेद्य आचमनीय जल मुखको सुगंधदायक ताम्बूल सुपारी सुवर्णमयी दक्षिणा इन सब करके तिनके मंत्रोंस समर्पण करै ऐसे सूर्यादि ग्रहोंको तिनके जो मंत्रहैं तिनतिनसे

धूपदीपनैवेद्याचमनीयमुखवासतांबूलपूगीफलद्रव्याणि तत्तन्मन्त्रैः समर्पयामि ॥ एवं सूर्यादिग्रहाणां तत्तन्मंत्रैः पूजनं कुर्यात्॥अथ सत्यनारायणपूजनप्रकारमाह ॥ पुष्पं गृहीत्वा ध्यानं कुर्यात् । ध्यायेत्सत्यं गुणातीतं गुणत्रयसमन्वितम् ॥ लोकनाथं त्रिलोकेशं कौस्तुभाभरणं हरिम् ॥ १ ॥

पूजन करै । अब सत्यनारायणकी पूजाका प्रकार वर्णन करैं हैं॥ पुष्प हाथमें लेक ध्यान करै। सत्यस्वरूप गुणोंसे अतीत तीनों गुणों सहित लोकके स्वामी त्रिलोकीके स्वामी कौ

स्तुभमणि पहिने ऐसे श्रीहरिको ध्यान करै ॥ १ ॥ नील जिनका वर्ण है पीताम्बर पहिरे हैं लक्ष्मी और भृगुलत्ताको जिनके वक्षःस्थलमें चिन्हहै गोविन्दहैं गोकुलके आनंद देनेवाले हैं ब्रह्मा शिव इत्यादिकोंके पूजन करनेके योग्यहैं॥२॥यह ध्यान समाप्त भयो॥प्रगट अप्रगट

निलवर्णं पीतवस्त्रं श्रीवत्सपदभूषितम् ॥गोविंदंगोकुलानंदंब्रह्माद्यैरपिपूजितम् ॥२॥इति ध्यानम्॥व्यक्ताव्यक्तस्वरूपाय हृषीकपतये नमः ॥ मया निवेदितो भक्त्या अर्घ्योऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ ३ ॥ इत्यर्घ्यम् ॥ नारायण नमस्तेऽस्तु नरकार्णवतारक॥पाद्यंगृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्धय॥४ ॥

जिनको रूप इंद्रियोंके स्वामी तिनकेअर्थ नमस्कार है मैंने भक्तिकरिके आपको अर्घ्य दीनो याको आप ग्रहण करो ॥ ३ ॥ यह अर्घ्य पूरो भयो ॥ तुम्हारेअर्थ नमस्कार है हे देवों

स. ना. ॥ १ ॥

के स्वामी! यह पाद्य ग्रहण करो और मोको सुख बढाओ॥४॥यह पाद्य है॥श्रीगंगाजीको जो जल है वो सब पापको हरनेवारो है शुभ है सो हे देवेश! आपके वास्ते है याते आप सुन्दर आचमन करो॥५॥ये आचमनीयहै॥हेदेव!हे पुरुषोत्तम! हेअनाथके नाथ! हे सर्वज्ञ!

इति पाद्यम्॥मंदाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्॥तदिदं कल्पितं देव सम्यगाचम्यतां त्वया ॥ ५ ॥ इत्याचमनीयम्॥स्नानं पंचामृतैर्देव गृहाण पुरुषोत्तम॥अनाथनाथ सर्वज्ञ गीर्वाणप्रणतिप्रिय ॥ ६ ॥ इति स्नानम् ॥ वेदसूक्तसमायुक्तेयज्ञसामसमन्विते॥सर्ववर्णप्रदे देव वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ ७ ॥ इति वस्त्रम् ॥

हे देवतानके नमस्कारसेंही प्रसन्न होनेवारे! हे भगवन्!या पंचामृतसे तुम स्नान करो ॥६॥यह स्नान भयो ॥वेदके सूक्तसहित यज्ञसामवेद या करके युक्त,सबवर्णके देनेवारे,

पू. ॥ १ ॥

ये मेरे दिये वस्त्र हैं इनको ग्रहण करो॥७॥ ऐसे वस्त्र देवे॥ ब्रह्मा विष्णु महादेव इन्होंने जाको बनायो ऐसो जो यह ब्रह्मसूत्र यज्ञोपवीत याके दानकरनेसे श्रीलक्ष्मीपति प्रसन्न होवें ॥८॥ यह जनेऊका मंत्र है॥ श्रीखंडचंदन दिव्य सुगंधसहितसुन्दर मनोहर चंदन हैसो आप

ब्रह्मविष्णुमहेशैर्यन्निर्मितंब्रह्मसूत्रकम् ॥ यज्ञोपवीतदानेन प्रीयतां कमलापतिः ॥८॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ श्रीखंडं चंदनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चंदनं प्रतिगृह्यताम्॥९॥ इति चंदनम् ॥ मल्लिकादिसुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयाहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥ १० ॥

ग्रहण करो। कैसेआप हो सुरोंमें श्रेष्ठहो॥९॥ यहचंदनको मंत्रहै॥ चमेली इत्यादि सुगन्धके पुष्पमालती इत्यादिके फूल हे प्रभो! मैं लायाहूँ पूजाके लिये सो तुम ग्रहण करो ॥ १० ॥

यह पुष्प चढानेको मन्त्रहै ॥अनेक वनस्पतियोंके रससे उत्पन्न सुगंध जामें ऐसे उत्तम जामें गंधसब दवतानके सूँघनेके योग्य यह धूप है सो आप ग्रहण करो॥११॥यह धूपको मंत्र है॥ घृतसहित बत्तीसहित अग्निसे जगायो जो यह दीपक है सो हे देवेश ! या दीपकको आप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्॥११॥इति धूपम्॥साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपंगृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापह॥१२॥इति दीपम्॥घृतपक्वंहविष्यान्नं पायसं च सशर्करम्॥नानाविधं च नैवेद्यं विष्णो मे प्रतिगृह्यताम् ॥ १३ ॥

ग्रहण करो त्रिलोकीके अँधेरेको नाश करनेवारे आप हो ॥१२॥ यह दीपकको मंत्र है ॥ घृतमें पकाये ये मूँग भात खीर शक्कर जामें पड़ी है और नाना प्रकारके नैवेद्य सो हैं हे

विष्णु आप ग्रहण करो ॥ १३ ॥ यह नैवेद्यको मंत्र है ॥ सबके पापको हरनेवारो दिव्य निर्मलगंगाजीको जल है सो हे पुरुषोत्तम !आचमनके लिये हम देवैहैं ग्रहण करो ॥ १४॥

इति नैवेद्यम्॥सर्वपापहरं दिव्यं गांगेयं निर्मलं जलम् ॥आचमनं मया दत्तं गृह्यतां पुरुषोत्तम॥ १४ ॥इत्याचमनम् ॥ लवंगकर्पूरयुतं तांबूलं सुरपूजितम्॥ प्रीत्या गृहाण देवेश मम सौख्यं विवर्द्धय॥ १५॥ इति तांबूलम्॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥ १६ ॥

यह आचमनको मन्त्र हैं॥ लौंग कपूर जामें, देवताननें जाको मानो ऐसो तांबूल प्रीति करके ग्रहण करो। हे देवेश ! मोको सुख बढाओ ॥ १५ ॥ यह तांबूलको मंत्र है॥ हे देव!

ये फल मैंने तुम्हारे सामने धरे हैं ता करके मोको जन्म जन्ममें अनेक फलकी प्राप्ति होवै॥ ॥ १६ ॥यह फलको मंत्र है॥चार जामें बर्त्ती घीस भरी हुई ऐसी आरतीसे जगत्के पति

इति फलम्॥ चतुर्वर्तिसमायुक्तं घृतेन च सुपूरितम्॥ नीराजनेन सन्तुष्टो भवत्वेव जगत्पतिः ॥ १७ ॥ इतिनीराजनम्॥ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानिच ॥ तानि तानि विनश्यंति प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १८॥इति प्रदक्षिण॥ततःपुष्पांजलिं नमस्कारांश्च कृत्वा स्तुवीत ॥ यन्मया भक्ति युक्तेन पत्रं पुष्पं फलं जलम्॥निवेदितं च नैवेद्यं तद्गृहाणानुकंपया॥१९॥

संतुष्ट होते ही हैं ॥१७॥यह आरतीको मंत्रहै॥जो कोई जन्मांतरके करे भये पाप हैं वे पाप सब आपकी परिक्रमा करनेमें एक एक पांव धरनेमें नाश होवेहैं ॥१८॥या मंत्रसे प्रद

क्षिणा करे ॥ ताके पीछे पुष्पांजलि नमस्कार करके स्तुति करै। हे सत्यनारायण ! जो मैंने भक्तियुक्त होयकै पत्र पुष्प फल जल आपको निवेदन कीने हैं सो आप कृपा करिके ग्रहण करो ॥ १९ ॥ जो मंत्रहीन है क्रियाहीन है भक्तिहीन है हे जनार्दन! मैंने पूजा करी है

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनजनार्दन॥यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २० ॥अमोघं पुण्डरीकाक्षं नृसिंहं दैत्यसूदनम्॥हृषीकेशं जगन्नाथं वागीशं वरदायकम् ॥ २१ ॥

सो सब संपूर्ण होवै॥२०॥महागम्भीर कमल सरीखे जिनके नेत्र श्रीनृसिंहजी हिरण्यकशिपु दैत्यके मारनेवाले इंद्रियोंके स्वामी सब जगत्के नाथ वाणीके स्वामी वरदायक ॥ २१ ॥

तीन गुणोंको जाको स्वरूप व तीनों गुणोंसे परे गौवोंकी रक्षा करनेवाले गरुड जाकी ध्वजामें ऐसे जनार्दन मनुष्योंसे विलक्षण जानकीके पति दुःख हरनेहारे॥२२॥ ऐसे पूर्वोक्त विशेषण जाके ऐसे श्रीमन्नारायणको सदा भक्ति करके हम प्रणाम करें हैं, दुर्गममें विषममें

गुणत्रयं गुणातीतं गोविंदं गरुडध्वजम् ॥ जनार्दनं जनातीतं जानकीव ल्लभं हरिम् ॥ २२ ॥ प्रणमामि सदा भक्त्या नारायणमतः परम् ॥ दुर्गमे विषमे घोरे शत्रुभिः परिपीडिते॥२३॥निस्तारयस्व सर्वेषु तथानिष्टभयेषु च ॥ नामान्येतानि संकीर्त्य ईप्सितं फलमाप्नुयात् ॥ २४ ॥

घोर स्थानमें शत्रुओंसे पीडित जो मैं हूँ सो मोकों ॥ २३ ॥सब अनिष्टभयोंकेविषे आप निस्तारो उद्धार करो ये नाम उच्चारण करे सो मनवांछित फल प्राप्त होवै है ॥ २४ ॥

अनेककामनाओंके देनेवाले महाप्रभु जो सत्यनारायण ताको हम प्रणाम करें हैं जाकी लीला करके विश्व विस्तृत हैं ऐसे देवताको नमस्कार है ॥२५॥ यह प्रार्थना भई ॥ श्रीसत्यदेवको

सत्यनारायणं देवं वन्देहं कामदं प्रभुम्॥ लीलया विततं विश्वं येन तस्मै नमोनमः ॥ २५ ॥ इति प्रार्थना ॥ अथ कथा ॥ व्यास उवाच ॥ एकदा नैमिषारण्ये ऋषयः शौनकादयः ॥ पप्रच्छुर्मुनयः सर्वे सूतं पौराणिकं खलु ॥ १ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ व्रतेन तपसा किं वा प्राप्यते वांछितं फलम्॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः कथयस्व महामुने ॥ २ ॥

नमस्कार है ॥ अब कथाका प्रारंभ करें हैं ॥ व्यासजी बोले—एक समय मननशील शौनकादिक सब ऋषि पुराणवक्ता सूतजीसे निश्चय करके पूँछते भये ॥ १ ॥ ऋषि पूँछै हैं—व्रत

करके क्या तप करके वांछित फल होता है सो हे महामुने! हम सब सुननेकी इच्छा करते हैं सो तुम कहो॥२॥सूतजी बोले कि-भगवान् कमलापतिसे नारदजीने पूछा है सो नारदजीके अर्थ जैसे कहते भये सो तुम सावधान होकरके सुनो ॥३॥ मनुष्योंके ऊपर कृपा

सूत उवाच॥ नारदेनैव संपृष्टो भगवान्कमलापतिः॥ सुरर्षये यथैवाह तच्छृणुध्वं समाहिताः॥ ३॥ एकदा नारदो योगी परानुग्रहकांक्षया॥ पर्यटन्विविधाँल्लोकान्मर्त्यलोकमुपागतः॥ ४॥ततो दृष्ट्वाजनान्सर्वान्नानाक्लेशसमन्वितान्॥ नानायोनिसमुत्पन्नान्क्लिश्यमानान्स्वकर्मभिः॥ ५॥

करनेके अर्थ एकदिन नारदमुनि अनेकलोकोंमें फिरते फिरते मनुष्यलोकमें आये ॥ ४॥ तहां नाना प्रकारके क्लेशोंसे पीडित नानाप्रकारकी योनियोंमें जिनके जन्म अपने

कर्मों करके महादुःखी ऐसे मनुष्योंको देखते भए॥५॥बोले कि, कौन उपाय करनेसे इन जीवोंका दुःखनाश होवै ऐसा मनमें विचार करके विष्णुलोकमें जाते भये॥६॥वहां वैकुंठलोकमें शुक्ल जिनको वर्ण सबमे व्यापक चार जिनके भुजा शंख चक्र गदा पद्म वन

केनोपायेन चैतेषां दुःखनाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ इति संचिंत्य मनसा विष्णुलोकं गतस्तदा॥६॥तत्र नारायणं देवं शुक्लवर्णं चतुर्भुजम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितम् ॥७॥ दृष्ट्वा तं देवदेवेशं स्तोतुं समुपचक्रमे॥
नारद उवाच ॥ नमो वाङ्मनसातीतरूपायानंतशक्तये ॥८॥

माला करके शोभित जो सबके स्वामी श्रीमन्नारायण हैं ॥ ७ ॥ तिन देवदेवको देखके स्तुति करते भए। श्रीनारदजी बोले कि वाणी मनसे न जानोजावो जाको रूप ऐसे अनंत

शक्तिधारी श्रीहरिको नमस्कार होय ॥ ८ ॥ आदि मध्य अन्त तुममें नहीं हैं मायागुण तुममें नहीं है सब गुणोंके आत्मा हो सबके आदिकारण हो भक्तोंकी पीडाके नाशक हो

आदिमध्यांतहीनाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ सर्वेषामादिभूताय भक्ताना मार्तिनाशिने ॥ ९ ॥ श्रुत्वा स्तोत्रं ततो विष्णुर्नारदं प्रत्यभाषत ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ किमर्थमागतोऽसि त्वं किंते मनसि वर्तते ॥ १० ॥

याते नमस्कार होय ॥९॥ शोभायमान षड्गुण ऐश्वर्यवान् श्रीविष्णु भगवान् ऐसी नारदजीकी स्तुति सुनके नारदके प्रति बोले कि हे नारदजी ! आप क्यों आये क्या आपके

मनमें है ॥ १० ॥ हे महाभाग नारदजी ! तुम सब कहो तो पीछे हम भी कहते हैं तब
श्री नारदजी बोले कि, मनुष्यलोकमें सब जीव नानाप्रकारके क्लेशोंसे दुःखित हैं नाना

कथयस्व महाभाग तत्सर्वं कथयामि ते ॥ नारद उवाच ॥ मत्यर्लोके
जनाः सर्वे नानाक्लेशसमन्विताः॥नानायोनिसमुत्पन्नाःपच्यन्ते पापकर्म
भिः॥११॥ तत्कथं शमयेन्नाथ लघूपायेन तद्वद ॥श्रोतुमिच्छामि तत्सर्वं
कृपास्ति यदिते मयि ॥ १२ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ साधु पृष्टं त्वया वत्स
लोकानुग्रहकांक्षया॥ यत्कृत्वामुच्यते मोहात्तच्छृणुष्व वदामिते ॥ १३ ॥

योनियोंमें उत्पन्न हैं पापके कर्मोंकरके पक रहे हैं॥११॥ सो हे नाथ ! उनके पाप कैसे नाश
होवैं ऐसा कोई लघु उपाय कहो जो आप मोपर कृपालु हो तो ॥ १२ ॥ श्रीभगवान् बोले

हे पुत्र! लोकोंके अनुग्रहकी इच्छा करके तुमने बहुत सुन्दर वार्ता पूछी है जाके करेसे मोहसे दुःखसे मनुष्य छूट जावै है सो तुम सुनो हम तुमसे कहते हैं ॥ १३ ॥ महापुण्य दायक एक व्रत है जो स्वर्गमें मनुष्यलोकमें महादुर्लभ है सो तुम्हारे स्नेहकेमारे अबमैं

व्रतमस्ति महापुण्यं स्वर्गे मर्त्येच दुर्लभम्॥तव स्नेहान्मयावत्स प्रकाशः क्रियतेऽधुना ॥१४॥सत्यनारायणस्यैवं व्रतं सम्यग्विधानतः॥कृत्वा सद्यः सुखं भुक्त्वा परत्र मोक्षमाप्नुयात् ॥१५॥ तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं नारदो मुनिरब्रवीत्॥ नारद उवाच॥ किं फलं किं विधानं च कृतं केनैव तद्व्रतम् ॥ १६ ॥

सब कहता हूँ ॥ १४ ॥ सत्यनारायणके व्रतको सुन्दर विधान करके करै तो जल्दी अत्यन्त सुखका भोग करके पीछे मोक्षको प्राप्त होवै॥ १५॥यह श्रीभगवानका वाक्य सुनके नारदमुनि

बोले श्रीनारदजी कहते हैंकि क्या फल है याको क्या विधान है और कौनने यहव्रत कीनो है ॥ १६ ॥ सो सब आप विस्तारसे कहो कब यहव्रत करा जावै है तब श्रीभगवान्बोले कि दुःख शोक इत्यादिको नाश करनेवारोहै धन धान्यको बढानेवारो है १७॥ सौभाग्यदेताहै

तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि कदा कार्यं हि तद्व्रतम्॥श्रीभगवानुवाच ॥ दुःख शोकादिशमनं धनधान्यप्रवर्द्धनम् ॥ १७॥ सौभाग्यसन्ततिकरं सर्वत्र विजयप्रदम् ॥ यस्मिन्कस्मिन्दिने मर्त्यो भक्तिश्रद्धासमन्वितः॥ १८ ॥ सत्यनारायणं देवं यजेच्चैव निशामुखे ॥ ब्राह्मणैर्बांधवैश्चैव सहितो धर्मत त्परः ॥ १९ ॥

सन्तान उत्पन्न करैहै सब जगे विजय करावै है जिस किसी दिनमें मनुष्य भक्ति श्रद्धासे युक्त होके ॥१८॥ सायंकालमें सत्यनारायण जो देवता हैं तिनको पूजनकरै ब्राह्मण भाई

बंधु इनकरके सहित धर्ममें तत्पर रहै ॥१९॥ नैवेद्य भक्तिसे देवे उत्तम सवासेरको सुदन्र
मगद बनावे केलाके फल होवै घृत दुग्ध गेहूँको चूर्ण लेवै॥२०॥जो गेहूँकी चूर्ण हाजर न

नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्ष्यमुत्तमम् ॥ रंभाफलं घृतं क्षीरं गोधूमस्य
च चूर्णकम् ॥ २० ॥ अभावे शालिचूर्णं वा शर्करा वा गुडस्तथा ॥ सपादं
सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् ॥ २१ ॥ विप्राय दक्षिणां दद्यात्कथां
श्रुत्वा जनैः सह ॥ ततश्चबंधुभिः सार्धं विप्रांश्च प्रतिभोजयेत् ॥२२॥

होवैतोशालीको चूर्ण शक्कर अथवा गुड मिलावै बासनमें सवापांच सेरके सवासेर करके
इकट्ठे करै और नैवेद्य समर्पण करै॥ २१ ॥सब मनुष्योंको बुलायके कथा सुनै ब्राह्मणोंको

दक्षिणा देवै पीछे भाई बन्धु सहित ब्राह्मणोंको भोजन करावै ॥२२॥ प्रसाद आप पावै नृत्य
गीतादि करावै पीछे सत्यनारायणको स्मरण करते करते अपने घरोंको चले जावैं ॥ २३ ॥
ऐसे मनुष्य करें तो उनकी मनोकामना निश्चय करके पूरी होवैंगी विशेष करके

प्रसादं भक्षयेद्भक्त्यानृत्यगीतादिकं चरेत्॥ततश्च स्वगृहं गच्छेत्सत्यनारा
यणं स्मरन्॥२३॥ एवं कृते मनुष्याणांवाञ्छासिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥विशेषतः
कलियुगे लघूपायोस्तिभूतले॥२४॥ इति श्रीस्कन्दपुराणे रेवाखण्डे सत्य
नारायणकथायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

पृथ्वीमें लघु उपाय यह है॥ २४ ॥ इति श्रीस्कन्दपुराणोक्त जो रेवाखण्ड तामें सत्यनारा
यणकी कथाको प्रथम अध्याय सम्पूर्ण भयो ॥ १ ॥

श्रीवैष्णव सूतजी बोले अब हे शौनकादिक ऋषीश्वरो ! और हम वर्णन करते हैं ॥ जाने प्रथम व्रत कीनोहै वाको वृत्तांतकहते हैं अति रमणीय काशीपुरमें अतिनिर्धन एक शतानन्द नामक ब्राह्मण होतो भयो॥ १॥भूख प्याससे व्याकुल होके नित्य पृथ्वीमें घूमतो

सूत उवाच ॥ ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि कृतं येन पुरा द्विज ॥ कश्चि त्काशीपुरे रम्ये ह्यासीद्विप्रोतिनिर्धनः ॥ १ ॥ क्षुत्तृड्भ्यांव्याकुलो भूत्वा नित्यं बभ्राम भूतले ॥ दुःखितं ब्राह्मणं दृष्ट्वा भगवान्ब्राह्मणप्रियः ॥ २ ॥ वृद्धब्राह्मणरूपस्तं पप्रच्छ द्विजमादरात् ॥ किमर्थं भ्रमसे विप्र महीं नित्यं सुदुःखितः ॥ ३ ॥

फिरे सो भगवान्को जो श्री वैष्णव(शंखचक्रांकित)ब्राह्मण हैं ये बहुतही प्यारेहैं यासे ब्राह्मणको दुःखी देखके ॥ २ ॥ वृद्ध ब्राह्मणरूप बनके इस शतानन्द ब्राह्मणसे पूछते भये

हे विप्र! क्यों तुम सब पृथ्वी पर नित्यदुःखीहोके घूमते हो ॥ ३॥ सो सब हमारी सुनबेकी इच्छाहै हे द्विजनमें श्रेष्ठ!तुम हमसे कहो ब्राह्मण बोला मैं ब्राह्मण हूँ अति दरिद्री हूँ भिक्षाके

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां द्विजसत्तम ॥ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ ब्राह्मणोऽतिदरिद्रोऽहं भिक्षार्थं वै भ्रमे महीम् ॥ ४ ॥ उपायं यदि जानासि कृपया कथय प्रभो ॥ वृद्धब्राह्मण उवाच ॥ सत्यनारायणो विष्णुर्वांछितार्थफलप्रदः ॥ ५ ॥

लिये पृथ्वीपै घूमतो फिरतो हूँ ॥ ४ ॥हे प्रभो! कोई उपाय दरिद्रमेटनेको तुम जानते हो तो कृपा करके कहो तब वे वृद्धब्राह्मणबोले कि:सत्यनारायण जो विष्णु हैं सो मनवांछित फल

दायक हैं ॥ ५ ॥ सो हे विप्र ! तिनको तू व्रत कर पूजनकर पूजनके करनेसे सब दुःखोंसे मनुष्य छूट जावैं हैं ॥ ६ ॥ बडी विधिसे या व्रतको विधान इस ब्राह्मणको कहिके व सत्य

तस्य त्वं पूजनं विप्र कुरुष्व व्रतमुत्तमम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ ६ ॥ विधानं च व्रतस्यापि विप्रायाभाष्य यत्नतः ॥ सत्य नारायणोवृद्धस्तत्रैवांतरधीयत ॥ ७ ॥तद् व्रतं संकरिष्यामि यदुक्तं ब्राह्मणेन वै ॥ इति संचिन्त्य विप्रोऽसौ रात्रौ निद्रां न लब्धवान् ॥ ८ ॥

नारायण वृद्धब्राह्मणरूपधारी तबहीं अन्तरधान होगये ॥७॥पश्चात् इस शतानन्दने विचारो कि,जो व्रत ब्राह्मणने कह्यो है वो हम करेंगे ऐसे विचारकरके रात्रिको वाको निद्रा न आती

भई॥८॥तापीछे प्रातःकालमें उठके बोले कि· सत्यनारायणको व्रत हम करेंगे ऐसे संकल्प कर भिक्षाके निमित्त वो ब्राह्मण जातो भयो॥ ९ ॥ इसी दिन ब्राह्मणको बहुत धन प्राप्त

ततः प्रातःसमुत्थाय सत्यनारायणव्रतम् ॥ करिष्य इति संकल्प्य भिक्षार्थमगमद्द्विजः ॥९॥ तस्मिन्नेव दिने विप्रः प्रचुरं द्रव्यमाप्तवान् ॥ तेनैव बन्धुभिः सार्धं सत्यस्य व्रतमाचरत् ॥१०॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तः सर्वसंपत्समन्वितः ॥ बभूव स द्विजश्रेष्ठो व्रतस्यास्य प्रभावतः ॥ ११ ॥

भयो तिसी धनसे भाई सहित सत्यनारायणको व्रत करतो भयो॥ १० ॥ सब दुःखोंसे छूट के सब सम्पदा वाके होगई सबब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ श्रीवैष्णव शंख चक्र गदाधारी ब्राह्मण होतो

भयोयाही व्रतके प्रभावसे॥ ११॥वाहीदिनसे महीनामहीनामें व्रतकरतो भयोऐसे नारायणको यह व्रत करके वह ब्राह्मणोत्तम॥ १२ सब पापोंसे छूटके दुर्लभ मोक्षको प्राप्त होतो भयो ॥

ततःप्रभृति कालं च मासिमासि व्रतं कृतम् ॥ एवं नारायणस्येदं व्रतं कृत्वा द्विजोत्तमः ॥ १२ ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तो दुर्लभं मोक्षमाप्तवान्॥ व्रतमस्य यदा विप्राः पृथिव्यां संकरिष्यति ॥ १३ ॥ तदैव सर्वदुःखं च मनुजस्य विनश्यति ॥ एवं नारायणेनोक्तं नारदाय महात्मने ॥ १४ ॥

हे ब्राह्मणो! जब या व्रतको कोईभी पृथिवीमें करेगो॥ १३॥तबही मनुष्यके सब दुःख विनाशको प्राप्तहोवेंगे ॥ एसे महात्मा श्रीवैष्णव नारदजीसे श्रीमन्नारायणने कह्यो है ॥ १४ ॥

सोई हे ब्राह्मणो ! मैं तुमसे कह्यो और क्याकहूँ ॥ तब ऋषि बोले कि हे मुने ! उस ब्राह्मण से सुनके फेर यह व्रत पृथ्वीमें कौनने करचो सो हमारे सुननेकी इच्छा है॥ १५॥ सूतजी

मयातत्कथितं विप्राः किमन्यत्कथयामि वः ॥ ॥ ऋषय ऊचुः॥ ॥ तस्माद्विप्राच्छ्रुत केन पृथिव्यां चरित मुने ॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामः श्रद्धास्माकं प्रजायते ॥ १५॥ सूत उवाच ॥ ॥ शृणुध्वं मुनयः सर्वे व्रतं येन कृतं भुवि॥ एकदा स द्विजवरो यथाविभवविस्तरैः॥ १६॥ बन्धुभिःस्वजनैः सार्धं व्रतं कर्तुं समुद्यतः॥ एतस्मिन्नंतरे काले काष्ठकेता समागमत्॥ १७॥

बोले कि हे मुनियो! जोने यह व्रत कीनोहै पृथिवीमें वाको सुनो। एक दिन वो ब्राह्मण जैसो वाको धनहै वैसो विस्तार करके॥ १६ ॥ भाई बंधु सहित व्रत करतो भयो इस कालमें

कोई लकडी बेचनेंवारो आवतो भयो ॥१७॥ लकडीको बोझा बाहर धरके ब्राह्मणके घरमें आवतो भयो ॥ प्यासो हो व्रत करेहुए ब्राह्मणको देखकर॥ १८॥ प्रणाम करके ब्राह्मणसे

बहिः काष्ठं च संस्थाप्य विप्रस्य गृहमाययौ ॥ तृष्णया पीडितात्मा च दृष्ट्वाविप्रं कृतव्रतम् ॥ १८॥ प्रणिपत्य द्विजं प्राह किमिदं क्रियते त्वया॥ कृते किं फलमाप्नोति विस्तराद्वद मे प्रभो ॥ १९ ॥ विप्र उवाच ॥ सत्य नारायणस्येदं व्रतं सर्वेप्सितप्रदम्॥ तस्य प्रसादान्मे सर्वं धनधान्यादिकं महत् ॥ २०॥

बोले कि यह तुम क्या करते हो हे प्रभो ! याके करनेसे क्या फल मिलैहै सो मोसे कहो ॥१९॥वो ब्राह्मण बोला कि, सबको मनवांछितफल देनेवारो यह सत्यनारायणको व्रत है

ताकी कृपासे मेरे धन धान्यादिक ये सब हैं॥२०॥उनसे यह व्रत जानके लकडी बेचनवारो बडो प्रसन्न भयो प्रसाद पायके जल पीतो भयो पीछे अपने घरमें चलो आयो ॥२१॥सत्य

तस्मादेतद् व्रतं ज्ञात्वा काष्ठक्रेतातिहर्षितः॥ पपौ जलं प्रसादं च भुक्त्वा स नगरं ययौ ॥ २१ ॥ सत्यनारायणं देवं मनसा इत्यचिंतयत् ॥ काष्ठं विक्रयतोग्रामे प्राप्यते चाद्य यद्धनम् ॥ २२ ॥ तेनैव सत्यदेवस्य करिष्ये व्रतमुत्तमम् ॥ इति संचिंत्य मनसा काष्ठं कृत्वा तु मस्तके ॥ २३ ॥

नारायण देवताको मनसे चिंतवन करतो भयो कि काष्ठ बेचनेसे जो गांवमेंसे धन मिलेगो ॥ २२॥तिसी करके उत्तम सत्यनारायणको यह व्रत करेंगे ऐसे मनमें चिंतवन करके काष्ठका

बोझा माथेपर रखकर ॥ २३ ॥ जहां धनी लोग रहते हैं वा नगरमें गयो वा दिन काष्ठके बेचनेसे द्विगुणो मोल वाको प्राप्त होतो भयो॥२४॥ताके पाछे वाको हृदय प्रसन्न भयो सो

जगाम नगरे रम्ये धनिनां यत्र संस्थितिः॥ तद्दिने काष्ठमूल्यं च द्विगुणं प्राप्तवानसौ ॥ २४ ॥ ततः प्रसन्नहृदयः सुपक्कं कदलीफलम् ॥ शर्कराघृत दुग्धं च गोधूमस्य च चूर्णकम् ॥२५॥ कृत्वैकत्र सपादञ्च गृहीत्वा स्वगृहं ययौ ॥ ततो बन्धून्समाहूय चकार विधिना व्रतम् ॥ २६ ॥

सुन्दर पके भये केलाके फल चीनी घृत दुग्ध गेहूँको चून ॥२५॥ इन सबको सवासेरकरकेअपने घर लेके चले आयो पाछे भाई बन्धुओंको बुलायके बडी विधि सों व्रत करतो भयो॥२६॥

इसी व्रतके प्रभावसे धन पुत्र वालो होगयो या लोकमें सुख भोगके अंतमें सत्यनाराय
णके लोकको प्राप्त होतो भयो ॥ २७ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणोक्तरेवाखंडे वृन्दावनवासि

तद्व्रतस्य प्रभावेण धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इहलोके सुखं भुक्त्वा चांते
सत्यपुरं ययौ ॥ २७ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रत
कथायां द्वितीयोऽध्यायः॥२॥सूत उवाच ॥ ॥ पुनरग्रे प्रवक्ष्यामिशृणुध्वं
मुनिसत्तमाः। पुरा चोल्कामुखो नाम नृपश्चासीन्महामतिः ॥ १ ॥

नारायणशास्त्रिविरचितसत्यनाराणकथाभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ सूतजी
बोले कि, हे मुनियोंमें श्रेष्ठ! फिर आगे कहते हैं कि पहिले एक उल्कामुख नाम करके या

पृथ्वीको राजा होतो भयो ॥ १ ॥ जितेंद्रिय सत्य बोलै रोज देवालयोंमें जावै और वो सुन्दर बुद्धिवारो दिन २ धन दैके ब्राह्मणोंको प्रसन्न करतो भयो ॥ २ ॥ कमलसमान

जितेंद्रियः सत्यवादी ययौ देवालयं प्रति॥ दिने दिने धनं दत्त्वा द्विजान्संतोषयन्सुधीः॥२॥भार्या तस्य प्रमुग्धा च सरोजवदना सती॥भद्रशील नदीतीरे सत्यस्य व्रतमाचरत् ॥३ ॥एतस्मिन्नंतरे तत्र साधुरेकः समागतः॥ वाणिज्यार्थं बहुधनैरनेकैः परिपूरितः ॥ ४ ॥

जाको मुख ऐसी तिसकी प्रमुग्धा स्त्री है वे दोनों भद्रशीला नदीके किनारे पर सत्यनारायणको व्रत करते भये ॥ ३ ॥ याही अंतरमें एक साधु जाको नाम ऐसो वैश्य आवतो

भयो व्यापारके लिये बहुत धन करके पूरित हो ॥ ४ ॥ वहां तीरपर नाव खडी करके राजाके पास आयो इस राजाको व्रती देखके विनती करक पूछतो भयो ॥ ५ ॥साधु

नावं संथाप्य तत्तीरे जगाम नृपतिं प्रति ॥ दृष्ट्वा स व्रतिनं भूपं पप्रच्छ विनयान्वितः ॥५॥ साधुरुवाच ॥ किमिदं कुरुषे राजन्भक्तियुक्तेन चेतसा॥प्रकाशं कुरु तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि सांप्रतम् ॥राजोवाच ॥ पूजनं क्रियते साधो विष्णोरतुलतेजसः ॥ व्रतंचस्वजनैःसार्द्धं पुत्राद्यावाप्तिकाम्यया ॥७॥

बनियां बोले कि, हे राजन्! भक्तिसहित चित्तकरके यह क्या करतेहो यह सब हमको कहो या समय हमारी सुनबेकी इच्छाहै ॥ ६ ॥ राजा बोले कि हे साधु वैश्य! अतुल जिनमें तेज ऐसे सत्यनाराणका पूजन करैहैं भाई बन्धु सहित पुत्रकी चाहनाके वास्ते ऐसे जानो ॥७ ॥

राजाको वचन सुनकरके साधु बनियां बडे आदरसे बोला हे राजन्! यह सब तुम हमसे कहो जो तुम कहोगे सो हम सब करेंगे ॥ ८ ॥ मेरेभी सन्तान नहीं है या व्रतसे निश्चय

भूपस्य वचनं श्रुत्वा साधुः प्रोवाच सादरम् ॥ सर्वं कथय मे राजन्करिष्येहं तवोदितम् ॥ ८ ॥ ममापि सन्ततिर्नास्ति ह्येतस्माज्जायते ध्रुवम् ॥ ततो निवृत्य वाणिज्यात्सानंदो गृहमागतः ॥ ९ ॥ भार्य्यायै कथितं सर्वं व्रतं संततिदायकम् ॥ तदा व्रतं करिष्यामि यदा मे संततिर्भवेत्॥ १० ॥

है कि संतान मेरे होवैगो तब पाछे व्यापारसे लौटके महा आनंदित घरमें आवतो भयो ॥ ९ ॥वो संतान देनेवारोव्रत अपनी स्त्रीसे कहतो भयो बोला कि यह व्रत मैं तब करूंगा जब मेरे संतान होवैगो पहिले नहीं करूंगो ॥ १० ॥

ऐसे अति साधु वो लीलावती अपनी भार्यासे कहिके चुप होता भयो। महापतिव्रता वाकी लीलावती भार्या एक दिन ॥११॥ पति सहित आनंदित संसारियोंकी नाई सत्यनारायणकी

इति लीलावतीं प्राह पत्नीं साधुः स सत्तमः ॥ एकस्मिन्दिवसे तस्य भार्या लीलावती सती ॥ ११ ॥ भर्तृयुक्तानंदचित्ताऽभवद्धर्मपरायणा ॥ गर्भिणी साभवत्तस्य भार्या सत्यप्रसादतः ॥ १२ ॥ दशमे मासि वै तस्याः कन्यारत्नमजायत ॥ दिनेदिने सा ववृधे शुक्लपक्षे यथा शशी ॥१३॥ नाम्ना कलावती चेति तन्नामकरणं कृतम् ॥ ततो लीलावती प्राह स्वामिनं मधुरं वचः ॥ १४ ॥

कृपासे गर्भवती भई ॥ १२ ॥ दशवें महीनेमें वाके कन्यारूप रत्न उत्पन्न होतो भयो जैसे शुक्लपक्षको चन्द्रमा बढै ऐसे दिन दिन वो बढ़ती भई ॥ १३ ॥ वाको कलावती यह

नामकरण कीनो एक दिन लीलावती वाकी स्त्री स्वामीसे मधुरवचन बोली ॥ १४ ॥ पहिले संकल्प कियो भयो जो व्रत है क्यों नहीं करते हो, साधुवैश्य बोलो कि हे प्यारी ! या व्रतको या कन्याके व्याहके समयमें करेंगे ॥ १५ ॥ ऐसे अपनी स्त्रीसे कहिके अपने और

न करोषि किमर्थं वै पुरा संकल्पितं व्रतम् ॥ साधुरुवाच ॥ विवाहसमये त्वस्याः करिष्यामि व्रतं प्रिये ॥ १५ ॥ इति भार्यां समाश्वास्य जगाम नगरं प्रति । ततः कलावती कन्या ववृधे पितृवेश्मनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वा कन्यां ततः साधुर्नगरे सखिभिः सह ॥ मन्त्रयित्वा द्रुतं दूतं प्रेषयामास धर्मवित् ॥ १७ ॥

नगरोंके प्रति जातो भयो पाछे वो कलावती कन्या पिताके घरमें बढतीभई ॥ १६ ॥ वा साधुने कन्याको सखियोंके साथ देखी तब सलाह करके बहुत शीघ्र धर्मात्मा वो वैश्य

दूतको भेजतो भयो ॥ १७॥ या कन्याकेब्याहके निमित्त श्रेष्ठ वर विचारके लावो वाकी आज्ञा पायके वो दूत कांचननाम नगरमें जातो भयो ॥ १८ ॥ तहांसे एक बणियांके पुत्रको

विवाहार्थं च कन्याया वरं श्रेष्ठं विचारय ॥तेनाज्ञप्तश्च दूतोऽसौ कांचनं नगरं ययौ ॥ १८ ॥ तस्मादेकं वणिक्पुत्रं समादायागतो हि सः । दृष्ट्वा तु सुन्दरं बालं वणिक्पुत्रं गुणान्वितम् ॥ १९ ॥ ज्ञातीभिर्बंधुभिः सार्द्धं परितुष्टेन चेतसा ॥ दत्तवान्साधुः पुत्राय कन्यां विधिविधानतः ॥ २० ॥

लेके वहां आयो बडे जामें गुण सुन्दर ऐसे बालक वा वैश्यके पुत्रको देखके ॥ १९. ॥ बडो प्रसन्न होके जातिके भाई बन्धुनको इकट्ठ करके वा साधुवाणियांने पुत्रके लिये बडी विधि विधानसे कन्याको विवाह कियो ता पाछे भाग्यके वशते वो सत्यनारायणके

व्रतको फेर भूलगयो याते वाके व्याहके समयमें सत्यनारायण रूठ गये॥२०॥तब कुछेक दिनमें थोडे कालमें निजकाममें चतुर वो लक्ष्मीवान् वैश्यपुत्र जवांईको ले व्यापार कर

ततो भाग्यवशात्तेन विस्मृतंव्रतमुत्तमम्॥ विवाहसमये तस्यास्तेन रुष्टोऽभवत्प्रभुः॥२१॥ ततःकालेन कियता निजकर्मविशारदः॥वाणिज्याय गतः शीघ्रं जामातृसहितो वणिक् ॥२२॥ रत्नसारपुरे रम्ये गत्वा सिंधुसमीपतः॥वाणिज्यमकरोत्साधुर्जामात्रा श्रीमता सह ॥२३॥तौगतौ नगरे रम्ये चन्द्रकेतोर्नृपस्य च॥ एतस्मिन्नेव काले तु सत्यनारायणः प्रभुः ॥ २४ ॥

नेको चलोजातो भयो ॥ २२ ॥ समुद्रके किनारेसे रत्नसारपुरमें जायके लक्ष्मीवान् जवांई करके सहित वाणिज्यकर्म करतो भयो॥२३॥ वे दोनों चन्द्रकेतु राजाके नगरमें गये

याही कालमें सत्यनारायण प्रभु ॥ २४ ॥ वाकी भ्रष्ट प्रतिज्ञा देखके वाको शाप देते भये बोले कि, महादारुण कठिन दुःख याको होवेगो ॥ २५ ॥ एक दिन राजाके धनको

भ्रष्टप्रतिज्ञमालोक्य शापं तस्मै प्रदत्तवान् ॥ दारुणं कठिनं चास्य महद्दुःखं भविष्यति ॥ २५ ॥ एकस्मिन्दिवसे राज्ञो धनमादाय तस्करः ॥ तत्रैव चागतश्चौरो वणिजौ यत्र संस्थितौ ॥ २६ ॥ तत्पश्चाद्धावकान्दूतान्दृष्ट्वा भीतेन चेतसा ॥ धनं संस्थाप्य तत्रैव स तु शीघ्रमलक्षितः ॥२७॥

लेके वहां चोर आयो जहां ये धनवान् बनिये बैठे थे ॥२६ ॥ ताके पाछे भागे चले आवैं ऐसे दूतोंको देखके भयसे डरेभये चित्त करके धन वहां नावमें रखके झटपट

भाग गयो ॥ २७ ॥ ता पाछे वे राजाके सिपाही वहां आये जहां ये बैठेथे वहां राजाको धन देखके उन दोनों वैश्योंको बांधलीनो और राजद्वारको आये ॥ २८ ॥ बडी

ततो दूताः समायाता यत्रास्ते सज्जनो वणिक् ॥ दृष्ट्वा नृपधनं तत्र बद्ध्वा नीतौ वणिक्सुतौ ॥ २८ ॥ हर्षेण धावमानाश्च प्रोचुर्नृपसमीपतः ॥ तस्करौ द्वौ समानीतौ विलोक्याज्ञापय प्रभो॥ २९ ॥ राज्ञाज्ञप्तास्ततः शीघ्रं दृढं बद्ध्वा तु तावुभौ॥ स्थापितौ द्वौ महादुर्गे कारागारेऽविचारतः॥ ३० ॥

प्रसन्नतासे भागे आवैं राजाके समीप आयके बोले कि दो चोर पकडके हम लाये हैं हे प्रभो ! तुम देखके आज्ञा करो॥ २९ ॥ राजाकी आज्ञासे शीघ्र उनको खूब बांधके दोनोंको महाभारी जेलखानेमें कैद करते भये या बातको विचारभी न करतेभये ॥ ३० ॥

सत्यनारायणकी मायासे उनके बचनको किसीनेभी नहीं सुनो यह सत्यनारायणकी माया है। या कारणते उनको धन सब चन्द्रकेतुराजाने छीन लीनो ॥ ३१ ॥ ता शापसे इनके

मायया सत्यदेवस्य नश्रुतंकैस्तयोर्वचः॥अतस्तयोर्धनं राज्ञा गृहीतं चन्द्रकेतुना॥ ३१ ॥तच्छापाच्चतयोर्गेहे भार्या चैवातिदुःखिता ॥ चौरेणापहृतं सर्वंगृहे यच्च स्थितं धनम् ॥ ३२ ॥ आधिव्याधिसमायुक्ता क्षुत्पिपासाति दुःखिता॥अन्नचिंतापराभूत्वा बभ्राम च गृहे गृहे ॥कलावती तु कन्यापि बभ्राम प्रतिवासरम् ॥ ३३ ॥

घरमें स्त्रियां भी अतिदुःखित भई जो कुछ धन घरमें रह्यो सो सब चोर चुराय ले गये॥३२॥ शरीरमें पीडा मनमें चिंता भूंखी प्यासी अतिदुःखी मनको चिंता करती भई ॥ ३३ ॥

एक दिन कलावती कन्या महाभूँखी किसी ब्राह्मणके मंदिरमैंगई वहां जायके सत्यनारायण को व्रत देखती भई ॥ ३४ ॥ वहां बैठके कथा सुनके प्रार्थना करती भई प्रसाद पाया पाछे

एकस्मिन्दिवसे याताक्षुधार्ता द्विजमंदिरम् ॥गत्वापश्यद्व्रतं तत्र सत्यनारायणस्यच॥३४॥उपविश्यकथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि॥प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति ॥ ३५ ॥ माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः ॥पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते ॥३६॥कन्याकलावती प्राह मातरंप्रति सत्वरम्॥द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वांछितसिद्धिदम् ॥३७॥

रात्रिको घरमैं आवती भई ॥३५ ॥ प्रेमसे माता कलावती कन्यासे कहती भई कि हे पुत्री! रात्रिमें कहां रही क्या तेरे मनमें है ॥ ३६ ॥ यह सुन वो कलावती कन्या मातासे शीघ्र

बोली हे माता ! ब्राह्मणके मंदिरमें सब मनकी कामनाको पूरण करनेवारो व्रत मैंने देखो हो और वहां ही रही ॥ ३७ ॥ ऐसे कन्याके वाक्य सुनके व्रतकरनेकी इच्छा करती भई सो वो प्रसन्न होके बणियांकी स्त्री सत्यनारायणके व्रतकी इच्छा करती भई ॥ ३७ ॥

तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता॥ सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च ॥ ३८॥ व्रतं चक्रे सैव साध्वी बंधुभिः स्वजनैः सह ॥ भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥ अपराधं च मे भर्तु र्जामातुः क्षंतुमर्हसि ॥ व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः ॥ ४० ॥

सो वो साधुकी साध्वी स्त्री भाई बंधुओंके साथ व्रत करती भई और ये बोली कि मेरे पति मेरो जवांई ये दोनों अपने घरको आवें॥३९॥ मेरे पतिको और जँवाईको अपराध हे सत्य

एक दिन कलावती कन्या महाभूँखी किसी ब्राह्मणके मंदिरमेंगई वहां जायके सत्यनारायण को व्रत देखती भई ॥ ३४ ॥ वहां बैठके कथा सुनके प्रार्थना करती भई प्रसाद पाया पाछे

एकस्मिन्दिवसे याताक्षुधार्ता द्विजमंदिरम् ॥गत्वापश्यद्व्रतं तत्र सत्यनारायणस्यच॥३४॥उपविश्यकथां श्रुत्वा वरं प्रार्थितवत्यपि॥प्रसादभक्षणं कृत्वा ययौ रात्रौ गृहं प्रति ॥ ३५ ॥ माता कलावतीं कन्यां कथयामास प्रेमतः ॥पुत्रि रात्रौ स्थिता कुत्र किं ते मनसि वर्तते ॥३६॥कन्याकलावती प्राह मातरंप्रति सत्वरम्॥द्विजालये व्रतं मातर्दृष्टं वांछितसिद्धिदम् ॥३७॥

रात्रिको घरमें आवती भई ॥३५ ॥ प्रेमसे माता कलावती कन्यासे कहती भई कि हे पुत्री! रात्रिमें कहां रही क्या तेरे मनमें है ॥ ३६ ॥ यह सुन वो कलावती कन्या मातासे शीघ्र

बोली हे माता ! ब्राह्मणके मंदिरमें सब मनकी कामनाको पूरण करनेवारो व्रत मैंने देखो हो और वहां ही रही ॥ ३७ ॥ ऐसे कन्याके वाक्य सुनके व्रतकरनेकी इच्छा करती भई सो वो प्रसन्न होके बणियांकी स्त्री सत्यनारायणके व्रतकी इच्छा करती भई ॥ ३७ ॥

तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं व्रतं कर्तुं समुद्यता॥ सा मुदा तु वणिग्भार्या सत्यनारायणस्य च ॥ ३८॥ व्रतं चक्रे सैव साध्वी बंधुभिः स्वजनैः सह ॥ भर्तृजामातरौ क्षिप्रमागच्छेतां स्वमाश्रमम् ॥ ३९ ॥ अपराधं च मे भर्तुर्जामातुः क्षंतुमर्हसि ॥ व्रतेनानेन तुष्टोऽसौ सत्यनारायणः पुनः ॥ ४० ॥

सो वो साधुकी साध्वी स्त्री भाई बंधुओंके साथ व्रत करती भई और ये बोली कि मेरे पति मेरो जवांई ये दोनों अपने घरको आवें॥३९॥ मेरे पतिको और जँवाईको अपराध हे सत्य

नारायण! तुम क्षमा करनेके योग्य हो ऐसे सुन या व्रत करके सत्यनारायण प्रभु प्रसन्न होते भए ॥ ४० ॥ और राजामें उत्तम जो चंद्रकेतु नृपति ताको स्वप्न दिखाते भये। बोले कि, हे नृपोंमें श्रेष्ठ राजन्! ये दोनों जो कैदी वैश्य हैं इनको छोड देओ ॥ ४१ ॥ जो तुमने

दर्शयामास स्वप्नं हि चन्द्रकेतुं नृपोत्तमम् ॥ ४१ ॥ देयं धनं च तत्सर्वं गृहीतं यत्त्वयाधुना॥ नो चेत्त्वां नाशयिष्यामि सराज्यधनपुत्रकम्॥ ४२ ॥ एवमाभाष्य राजानं ध्यानगम्योऽभवत्प्रभुः ॥ ततः प्रभातसमये राजा च स्वजनैः सह ॥ ४३ ॥

इनको धन छीनो सो देओगे और जो न देवोगे तो राज्य धनपुत्र सहित तोकों हम नाश करदेवेंगे ॥ ४२ ॥ ऐसे प्रकारके कहिकै वो सत्यनारायणकी आकाशवाणी चुप

होगई तापाछे प्रातःकाल अपने स्वजनोंके साथ वो राजा ॥ ४३ ॥ सभामें बैठके अपने स्वप्नकोऔर मनुष्योंको कहतो भयो बंधेभये वे जो दोनों महाजन हैं उनको जल्दी छोड देओ ॥ ४४॥ ऐसे राजाके बचन सुनतेही उन दोनों वैश्योंको छोड देते भये वे सब

उपविश्य सभामध्ये प्राहस्वप्नं जनं प्रति॥बद्धौमहाजनौ शीघ्रं मोचयद्धौ वणिक्सुतौ॥४४॥इति राज्ञो वचःश्रुत्वा मोचयित्वा महाजनौ ॥समानीय नृपस्याग्र प्राहुस्ते विनयान्विताः ॥४५॥आनीतौ द्वौ वणिक्पुत्रौ मुक्तौ निगडबंधनात् ॥ ततो महाजनौ नत्वा चंद्रकेतुं नृपोत्तमम् ॥ ४६ ॥

जाकर राजाके सामने लायके बडी बिनती करके बोले ॥४५॥ वे दोनों वैश्योंको लाये हैं जो बेडीके बंधसे छूटे हैं तब दोनों वैश्य राजानमें उत्तम जो है चन्द्रकेतु ताहि को नम

स्कार करते भये ॥ ४६ ॥ पहिलो वृत्तांत है वाको स्मरण कर, भयसे विह्वल हो कुछ न
बोलते भये । राजा बनियनको देखके बडे आदरसे बचन बोलो ॥४७॥ कोई तुम्हारे प्रार

स्मरंतौ पूर्ववृत्तांतं नोचतुर्भयविह्वलौ ॥ राजा वणिक्सुतौ वीक्ष्य वचः
प्रोवाच सादरम् ॥ ४७ ॥ दैवात्प्राप्तं महद्दुःखमिदानीं नास्ति वै भयम् ॥
तदा स निगडत्यागं क्षौरकर्माद्यकारयत् ॥ ४८ ॥ वस्त्रालंकारकं दत्त्वा
परितोष्य नृपश्च तौ॥पुरस्कृत्य वणिक्पुत्रौ वचसातोषयद्भृशम् ॥४९॥

ब्धसे यह दुःख तुमको प्राप्त भयोहै अब भय नहीं है तब राजाने बेडी कटवाई क्षौर कर
वाया ॥ ४८॥ वस्त्र गहने देके उन दोनोंको प्रसन्न करके आगे करिके वाणीसे अत्यंत

संतोषकरावतो भयो॥४९॥ पहिले जोइनको द्रव्य छीन लीनो हो सो दूनो करके देतो भयो और राजा बोलो कि हे साधो! तुम अपने घरको जाओ॥५०॥उन्होंनें राजाको प्रणामकीनो और बोले कि आपकी कृपासे हम जावेंगे ऐसे कहि करिके वे महाभारी बनिये अपने

पुरानीतंतुयद्द्रव्यं द्विगुणीकृत्य दत्तवान् ॥ प्रोवाच तौ ततो राजा गच्छ साधो निजाश्रमम् ॥ ५० ॥ राजानं प्रणिपत्याह गंतव्यं त्वत्प्रसादतः ॥ इत्युक्त्वा तौ महावैश्यौ जग्मतुः स्वगृहं प्रति ॥ ५१ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

घरको जाते भये ॥ ५१ ॥ इतिश्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणकथाभाषाटीकायां श्रीवृन्दावननिवासिशास्त्रिनारायणदासविरचितायांतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

सूतजी बोले कि सुन्दर मंगल पूर्वक यात्रा साधु करतो भयो ब्राह्मणोंको धन देके नगरको जातो भयो ॥ १॥ जब वो साधु वैश्य कुछेक दूर गयो तब सत्यनारायण प्रभु वाके मनकी

सूत उवाच ॥ यात्रां तु कृतवान्साधुर्मंगलायनपूर्विकाम् ॥ ब्राह्मणेभ्यो धनं दत्त्वा तदा तु नगरंययौ ॥१॥ कियद्दूरे गते साधौ सत्यनारायणःप्रभुः॥ जिज्ञासां कृतवान् साधो किमस्ति तव नौस्थितम् ॥ २ ॥ ततो महाजनौ मत्तौ हेलया च प्रहस्य वै॥ कथम्पृच्छसि भो दंडिन्मुद्रां नेतुं किमिच्छसि ॥ ३ ॥

वार्ता जाननेकी इच्छा करके बोले कि हे साधो! तेरी नावमें क्या है॥ २॥तब वे महाजन महामदान्ध उनको अनादर करके हँसके बोले हे दंडिन्!कहा पूँछते हो क्या कुछ रुपये लेनेकी

इच्छा है॥ ३॥ परंतु मेरी नावमें तो लता पत्ता इत्यादिक हैं ऐसो निठुर वचन सुनके सत्यनारायण बोले कि; तेरो वचन सत्य होवै जो तू कहै सोई होवै॥ ४॥ ऐसे कहकै शीघ्र वो दंडी

लतापत्रादिकं चैव वर्तते तरणौ मम ॥ निष्ठुरं च वचःश्रुत्वा सत्यं भवतु ते वचः॥ ४॥ एवमुक्त्वा गतः शीघ्रं दण्डी तस्य समीपतः॥ कियद्दूरे ततो गत्वा स्थितःसिंधुसमीपतः॥ ५॥ गते दंडिनि साधुश्च कृतनित्यक्रियस्तदा उत्थितां तरणिं दृष्ट्वा विस्मयं परमं ययौ ॥ ६ ॥

ताके पाससे लौट आओ कुछ थोडीसी दूर जायके समुद्रके किनारे पर बैठ गयो ॥ ५ ॥ जब वो दंडी चलो गयो तब वो साधु नित्यक्रिया करके अपनी नावको बहुत हलकी उठीहुई

चलती देखके बडो विस्मयको प्राप्त भयो॥६॥और वा नावमें लतापत्रादिक देखकेमूच्छाँखा
यके भूमिमें गिरपडो थोडीदेरमें सावधान भयो तो महाचिन्ताभई॥७॥तब ॱॱ वाकीबेटीको

दृष्ट्वा लतादिकंचैवमूर्च्छितोन्यपतद्भुवि॥लब्धसंज्ञो वणिक्पुत्रस्ततश्चिंता
न्वितोऽभवत् ॥ ७ ॥ तदा तु दुहितुः कांतो वचनं चेदमब्रवीत् ॥ किमर्थं
क्रियते शोकः शापो दत्तश्च दंडिना ॥ ८ ॥ शक्यते तेन सर्वं हि कर्तुं
चात्र न संशयः ॥ अतस्तच्छरणं यामो वांछितार्थो भविष्यति॥ ९ ॥

मालकजँवाई यह वचन बोलो कि क्यों शोक करो हो यह तो वह दंडीने शाप दीनोहै८॥
वो दंडी सब कुछ करनेको समर्थ हैं याते वाकी शरण चलोगे तो तुम्हारो मनवांछित फल

पूरो होगो॥९॥ऐसे जँवाईके वचन सुनके वाके पास गयो वो दंडीको देख नमस्कार कर बडे आदरसे बोलो ॥ १० ॥ हे स्वामिन्! मेरे अपराधको क्षमा करो जो मैंने तुम्हारे सामने

जामातुर्वचनं श्रुत्वा तत्सकाशं गतस्तदा ॥ दृष्ट्वा च दंडिनं भक्त्या नत्वा प्रोवाच सादरम् ॥१०॥ क्षमस्व चापराधं मे यदुक्तं तव सन्निधौ ॥ एवं पुनः पुनर्नत्वा महाशोकाकुलोऽभवत् ॥ ११ ॥ प्रोवाच वचनं दण्डी विलपंतं विलोक्य च ॥ मा रोदीः शृणु मद्वाक्यं मम पूजाबहिर्मुखः ॥ १२ ॥

कह्यो हो, ऐसे बारंबार नमस्कार करके महाशोकसे व्याकुल भयो ॥ ११ ॥ वा वैश्यको विलाप करतो देखके दंडी बोलो मत रोवै मूरख मेरो वचन सुन, मेरी पूजासे तू बहिर्मुख है ॥१२॥

हे दुष्टबुद्धिवारे! मेरी अवज्ञा कीनी याते बारंबार तोको दुःख प्राप्त भयो ऐसे भगवान्के वाक्य सुनके स्तुति करने लगो ॥ १३ ॥ साधु वैश्य बोलो कि हे प्रभो! तुम्हारी माया

मामवज्ञाय दुर्बुद्धे लब्धं दुःखं मुहुर्मुहुः ॥ तच्छ्रुत्वा भगवद्वाक्यं स्तुतिं कर्तुं समुद्यतः ॥ १३ ॥ साधुरुवाच ॥ त्वन्मायामोहिताः सर्वे ब्रह्माद्यास्त्रिदिवौकसः ॥ न जानंति गुणान् रूपं तवाश्चर्यमिदं प्रभो ॥१४ ॥ मूढोऽहं त्वां कथं जाने मोहितस्तव मायया ॥ प्रसीद पूजयिष्यामि यथाविभवविस्तरैः ॥ १५ ॥

करके ब्रह्मादिक देवता सब मोहको प्राप्त होते हैं तुम्हारे आश्चर्यके करनेवारे या रूप और सौशील्यादि गुणको नहीं जानते हैं ॥ १४ ॥ मैं तो मूढ हूँ भला तुमें कैसे जानौं मैं तुम्हारी

मायासे मोहित हो रह्यो हौं अब तुम प्रसन्न होवो और जैसो मेरो पहिले धन वैभवको विस्तार हो तैसो करो मैं पूजा करूंगा ॥ १५ ॥ पहिले जो मेरो सब धन हो सो वैसेही करो मैं तुम्हारी शरण आयो हूँ मेरी रक्षा करो ऐसो भक्तिको वाक्य सुनकरके जनार्दन बहुत

पुरा वित्तं च तत्सर्वं त्राहि मां शरणागतम्॥ श्रुत्वा भक्तियुतं वाक्यं परितुष्टो जनार्दनः ॥१६॥ वरं च वांछितं दत्त्वा तत्रैवांतर्दधे हरिः॥ ततो नावं समारुह्य दृष्ट्वा वित्तप्रपूरिताम् ॥ १७ ॥ कृपया सत्यदेवस्य सफलं वांछितं मम॥ इत्युक्त्वा स्वजनैः सार्धं पूजां कृत्वा यथाविधि ॥ १८ ॥

प्रसन्न भये॥१६ ॥वाको वांछित वर देके श्रीविष्णु तहांई अंतर्धान होगये ता पाछे वो नावपर सवार भयो भरीपूरी नाव देखी ॥ १७ ॥ सत्यनारायणकी कृपासे सब मेरो वांछित फल

भयो ऐसे कहिकें स्वजन सहित यथा विधिसे पूजा करतो भयो॥ १८ ॥बडो हर्षसे पूर्ण भयो सत्यनारायणकी कृपासे नावको बडे यत्नसे चलने योग्य करके अपने देशको जाता भयो ॥ १९॥ वो वैश्य साधु अपने जँवाईसे बोलो कि, हे प्रिय ! मेरी रत्न

हर्षेण चाभवत्पूर्णः सत्यदेवप्रसादतः ॥नावं संयोज्य यत्नेन स्वदेशगमनं कृतम् ॥ १९ ॥ साधुर्जामातरं प्राह पश्य रत्नपुरीं मम ॥ दूतं च प्रेषयामास निजवित्तस्य रक्षकम् ॥ २० ॥ ततोऽसौ नगरं गत्वा साधुभार्यां विलोक्य च ॥ प्रोवाच वांछितं वाक्यं नत्वा बद्धांजलिस्तदा ॥ २१ ॥

पुरीको तुम देखो और अपने निज धनकी रक्षा करनेवारो दूत भेजतो भयो॥२०॥ वो दूत नगरमें जायके साधुकी स्त्रीको देखके हाथ जोडके वा समयमें वांछित वाक्य बोलो॥२१॥

या नगरके निकट जँवाई सहित लक्ष्मीवान् वैश्य बहुत भाई बंधु सहित आये हैं ॥ २२ ॥
ऐसे दूतके मुखसे वचन सुनके महाहर्ष भयो सत्यनारायणकी पूजा करके अपनी

निकटे नगरस्यैव जामात्रा सहितो वणिक् ॥ आगतो बंधुवर्गैश्च वित्तैश्च
बहुभिर्युतः ॥ २२ ॥ श्रुत्वा दूतमुखाद्वाक्यं महाहर्षवती सती॥ सत्यपूजां
ततः कृत्वा प्रोवाच तनुजां प्रति॥२३॥व्रजामि शीघ्रमागच्छ साधुसंदर्श
नाय च॥इति मातृवचः श्रुत्वा व्रतं कृत्वा समाप्य च॥२४॥प्रसादं च परि
त्यज्य गता सापि पतिंप्रति॥तेन रुष्टः सत्यदेवो भर्तारं तरणिं तथा॥२५॥

पुत्रीसे बोली ॥ २३ ॥ तू जलदी आव मैं साधुके देखनेको जाऊँहूँ ऐसे माताके वचनको
सुनके व्रतको समाप्त करके ॥ २४ ॥ सत्यनारायणको महाप्रसाद छोडके वो कन्या पतिके

पास आवती भई ता करके रुष्टभये सत्यदेव सो वाके पतिको और नावको ॥ २५ ॥ सब धनसहित जलमें डूब वाय देते भये तब वा कलावती कन्याने अपनो पति न देखो ॥२६॥

संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत ॥ ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम्॥ २६ ॥ शोकेन महता तत्र रुदती चापतद् भुवि ॥ दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम् ॥२७॥ भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत् ॥ चिंत्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः ॥२८॥

महाशोककरके तहां रोयबे लगी धरणीमें गिर पडी वा नावको डूबती देखके वा कन्याको बहुत दुःखी देखि ॥ २७ ॥ बडो भय जाके मनमें ऐसो वो साधु बोलो कि, यह कहा

आश्चर्य भयो वे सब नावके चलानेवारे भी महाचिंता करने लगे॥२८॥ तब वो लीलावती कन्याको देखके बडी भयभीत भई अतिदुःखसे विलाप करने लगी अपने भर्तासे बोली

ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाभवत्॥ विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत्॥ २९ ॥ इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः ॥ न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता ॥३० ॥ सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुंवाकेन शक्यते ॥ इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सह ॥ ३१ ॥

॥२९॥ या समय नावसहित वो जँवाइ कैसे अलक्षित होगयो ना जाने कौन देवताको अपराध बनपडो है ताने वाको हरलीनो॥३०॥ सत्यनारायणको माहात्म्य कौन जाननेको

पास आवती भई ता करके रुष्टभये सत्यदेव सो वाके पतिको और नावको ॥ २५ ॥ सब धनसहित जलमें डूब वाय देते भये तब वा कलावती कन्याने अपनो पति न देखो ॥२६॥

संहृत्य च धनैः सार्धं जले तस्यावमज्जयत ॥ ततः कलावती कन्या न विलोक्य निजं पतिम् ॥ २६ ॥ शोकेन महता तत्र रुदती चापतद् भुवि ॥ दृष्ट्वा तथाविधां नावं कन्यां च बहुदुःखिताम् ॥२७॥ भीतेन मनसा साधुः किमाश्चर्यमिदं भवेत् ॥ चिंत्यमानाश्च ते सर्वे बभूवुस्तरिवाहकाः ॥२८॥

महाशोककरके तहां रोयबे लगी धरणीमें गिर पडी वा नावको डूबती देखके वा कन्याको बहुत दुःखी देखि ॥ २७ ॥ बडो भय जाके मनमें ऐसो वो साधु बोलो कि, यह कहा

आश्चर्य भयो वे सब नावके चलानेवारे भी महाचिंता करने लगे॥२८॥ तब वो लीलावती कन्याको देखके बडी भयभीत भई अतिदुःखसे विलाप करने लगी अपने भर्तासे बोली

ततो लीलावती कन्यां दृष्ट्वा सा विह्वलाभवत्॥ विललापातिदुःखेन भर्तारं चेदमब्रवीत्॥ २९ ॥ इदानीं नौकया सार्धं कथं सोऽभूदलक्षितः ॥ न जाने कस्य देवस्य हेलया चैव सा हृता ॥३०॥ सत्यदेवस्य माहात्म्यं ज्ञातुंवाकेन शक्यते ॥ इत्युक्त्वा विललापैव ततश्च स्वजनैः सह ॥ ३१ ॥

॥२९॥ या समय नावसहित वो जँवाइ कैसे अलक्षित होगयो ना जाने कौन देवताको अपराध बनपडो है ताने वाको हरलीनो॥३०॥ सत्यनारायणको माहात्म्य कौन जाननेको

समर्थ है ऐसे कहिके अपने बन्धुसहित विलाप करतीभई ॥३१॥महाखेद करके लीलावती बेटीको गोदीमें लेके रोयबेलगी तब वो कलावती कन्या स्वामीके नष्ट होनेसे दुःखित भई ॥३२॥ वाकी खडाऊं लेके पीछे मरनेकी इच्छा करती भई कन्याके चरित्र देखके

ततो लीलावती कन्यां क्रोडे कृत्वा रुरोदह॥ततः कलावती कन्या नष्टे स्वामिनि दुःखिता॥३२॥गृहीत्वा पादुके तस्यानुगंतुं च मनोदधे॥कन्यायाश्चरितं दृष्ट्वा सभार्यः सज्जनो वणिक्॥ ३३ ॥ अतिशोकेन संतप्तश्चिन्तयामास धर्मवित् ॥ हृतं वा सत्यदेवेन भ्रान्तोऽहं सत्यमायया ॥ ३४ ॥

स्त्री सहित वो बनियां सज्जन॥३३॥अति शोकसे व्याकुल होके चिंता करने लगो वो सज्जन वैश्य धर्मवेत्ता बोले कि; ये सब सत्यनारायणने हरलीनो वा सत्यनारायणकी

मायाने कुछ कीनो ॥ ३४ ॥ सत्यनारायणकी पूजा करूंगो जैसो वैभवको विस्तार होगो
तैसो ऐसे बुलायके अपनोमनोरथ कहतो भयो ॥ ३५ ॥ बारंबार सत्यदेवको

सत्यपूजां करिष्यामि यथा विभवविस्तरैः॥इतिसर्वान्समाहूय कथयित्वा
मनोरथम् ॥ ३५ ॥ नत्वा च दण्डवद्भूमौ सत्यदेवं पुनःपुनः ॥ततस्तुष्टः
सत्यदेवो दीनानां परिपालकः ॥ ३६ ॥ जगाद वचनं चैनं कृपया भक्त
वत्सलः॥त्यक्त्वा प्रसादं ते कन्या पतिं द्रष्टुं समागता ॥ ३७ ॥

नमस्कारकरिके गरीबोंकी रक्षा करनेवारे श्री सत्यदेव प्रसन्न होगये ॥ ३६ ॥ भक्तवत्सल
कृपा करके ये वचन बोले कि, हमारे प्रसादका त्याग करके तेरी कन्या पतिको देखनेको

आई ॥३७॥ या कारणते तेरी कन्याको पति अदृष्ट होगयो निश्चय करके घर जायके प्रसाद पायके जो कदाचित् तेरीकन्या फिर आवे॥३८॥तो याको पति मिले पतिको सुखहोय वह

अतोऽदृष्टोऽभवत्तस्याः कन्यकायाः पतिर्ध्रुवम् ॥ गृहं गत्वा प्रसादं च भुक्त्वा सायाति चेत्पुनः ॥ ३८ ॥ लब्धभर्त्रीं सुता साधो भविष्यति न संशयः ॥कन्यका तादृशं वाक्यं श्रुत्वा गगनमंडलात् ॥ ३९ ॥ क्षिप्रं तदा गृहं गत्वा प्रसादं च बुभोज सा ॥ सापश्चात्पुनरागत्य ददर्श सुजनं पतिम् ॥ ४० ॥ ततःकलावती कन्या जगाद पितरं प्रति॥इदानीं च गृहं याहि विलंबं कुरुषे कथम् ॥ ४१ ॥

कन्या आकाशसे ऐसी वाणी सुनके ॥ ३९ ॥ बडी जल्दी घर जायक प्रसाद पावती भई सो वो कन्या फेर वहां आई और अपने सुजन पतिको देखती भई ॥ ४० ॥ तब कलावती

कन्या अपने पितासे बोली अब घरको चलो विलंब क्यों कररहे हो॥४१॥ यह कन्याके वो वचन सुनके वैश्यपुत्र साधु प्रसन्न भयो पाछे विधि विधानसे सत्यनारायणको पूजन

तच्छ्रुत्वा कन्यकावाक्यं संतुष्टोऽभूद्वणिक्सुतः॥पूजनं सत्यदेवस्य कृत्वा विधिविधानतः ॥ ४२ ॥ धनैर्बंधुगणैः सार्द्धं जगाम निजमंदिरम् ॥ पौर्णमास्यां च संक्रांतौ कृतवान्सत्यपूजनम् ॥ ४३ ॥

करके ॥ ४२ ॥ भाई बन्धु सहित अपने घरको आवतो भयो पूर्णमासीको संक्रांतिको सत्यनारायणको पूजन करतो भयो या लोकमें सुख भोगके अंतमें सत्यनारायणके

श्रीवैकुण्ठलोकको गयो कैसो बैकुण्ठ है जो अवैष्णव हैं उनको वो लोक नहीं मिलेहै। मायाकृत तीनों गुणोंसे रहितहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायण

इहलोके सुखं भुक्त्वाचांते सत्यपुरं ययौ ॥ (अवैष्णवानामप्राप्यं गुण त्रयविवर्जितम्) ॥४४ ॥ इती श्रीस्कंदपुराणे रेवाखंडे सत्यनारायणव्रतक थायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ सूत उवाच ॥ अथान्यच्च प्रवक्ष्यामि शृणु ध्वं मुनिसत्तमाः ॥ आसीत्तुंगध्वजो राजा प्रजापालनतत्परः ॥ १ ॥

व्रतकथायां श्रीवृन्दावननिवासि–श्रीमद्रंगाचार्यशिष्यपण्डित--पुरुषोत्तमरामानुजदाससूनु नारायणशास्त्रिविरचितायां भाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्रीसूतजी बोले कि हे मुनिसत्तमो ! सुनो और आगे कहते हैं प्रजापालनमें तत्पर

एक तुङ्गध्वज नाम करके राजा होतो भयो ॥ १ ॥ परन्तु वाने सत्यनारायणको प्रसाद त्यागकीनो यासे दुःखको प्राप्त होतो भयो एक दिन वो वनमें जायके बहुत प्रकारके पशुनको मारतो भयो ॥ २ ॥ पाछे आयके वटके मूलमें सत्यनारायणको पूजन देखतो भयो

प्रसादं सत्यदेवस्य त्यक्त्वा दुःखमवाप सः॥ एकदा स वनं गत्वा हत्वा बहुविधान्पशून् ॥ २ ॥ आगत्य वटमूलं च दृष्ट्वा सत्यस्य पूजनम् ॥ गोपाः कुर्वंति संतुष्टा भक्तियुक्ताः सबांधवाः ॥ ३ ॥ राजा दृष्ट्वा तु दर्पेण न गत्वा न ननाम सः ॥ ततो गोपगणाः सर्वे प्रसादं नृपसन्निधौ ॥ ४॥

महासन्तोषी भक्तियुक्त भाई सहित गोप वहां सत्यनारायणको पूजन करते ॥३॥ ॥ राजा देखे परन्तु गर्वके मारे पास न गयो नमस्कार न कीनो ता पाछे गोपोंके गण प्रसाद

राजाके पास ॥ ४ ॥ रखके आय बडी प्रसन्नतासे आप प्रसाद पावते भये ता पाछेके प्रसादको त्यागके राजा दुःखको प्राप्त होतो भयो ॥ ५ ॥ वाके सौ पुत्र नाश होगए और

संस्थाप्य पुनरागत्य भुक्त्वा सर्वं यथेप्सितम् ॥ ततः प्रसादं संत्यज्य राजा दुःखमवाप सः॥ ५ ॥ तस्य पुत्रशतं नष्टं धनधान्यादिकं च यत् ॥ सत्यदेवेन तत्सर्वं नाशितं मम निश्चितम् ॥६॥ अतस्तत्रैव गच्छामि यत्र देवस्य पूजनम् ॥ मनसा तु विनिश्चित्य ययौ गोपालसन्निधौ ॥ ७ ॥

धन धान्यादिक भी नाश भयो वाके निश्चय भयो कि सत्यनारायणने सब नाश कीनो ये निश्चय है ॥ ६ ॥ याते अब वहांई जावेंगे जहां इनको पूजन है मनसे निश्चय करके

गोपालोंके पास राजा गयो ॥ ७ ॥ ॥ तब यह राजा सत्यनारायणकी पूजा और व्रत गोप
गणोंके साथ भक्ति श्रद्धासहित होके विधिसे करतो भयो ॥ ८ ॥ सत्यनारायणकी कृपा

ततोऽसौ सत्यदेवस्य पूजांगोपगणैः सह॥ भक्तिश्रद्धान्वितो भूत्वा चकार
विधिना नृपः ॥ ८ ॥ सत्यदेवप्रसादेन धनपुत्रान्वितोऽभवत् ॥ इह लोके
सुखं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं ययौ ॥ ९ ॥ य इदं कुरुते सत्यव्रतं परमदुर्ल
भम् ॥ शृणोति च कथां पुण्यां भक्तियुक्तः फलप्रदाम् ॥ १० ॥

करके धन पुत्र याके होते भये या लोकमें सुख भोग अंतमें सत्यनारायणके पुरको जातो
भयो ॥ ९ ॥ परम दुर्लभ जो यह सत्यनारायणको व्रत याको जो कोई करता है भक्तियुक्त

फलकी देनेवारी जो यह कथा याको जो कोई सुनतोहैं ॥१०॥ताके सत्यनारायणकी कृपा करके धनधान्यादिकसब होवेगो दरिद्रीको धन प्राप्त होगो बन्धनमें जो होवेगो वाको बन्धन छूटैगो ॥ ११॥ डरो भयो है वो डरसे छूटैगो यह सत्यहै यामें कुछ संदेह नहीं है

धनधान्यादिकं तस्य भवेत्सत्यप्रसादतः॥ दरिद्रोलभते वित्तंबद्धोमुच्येत बन्धनात् ॥ ११ ॥ भीतो भयात्प्रमुच्येत सत्यमेव न संशयः॥ईप्सितं च फलं भुक्त्वा चांते सत्यपुरं व्रजेत् ॥१२ ॥ इति वः कथितं विप्राःसत्यनारायणव्रतम् ॥ यत्कृत्वा सर्वदुःखेभ्यो मुक्तो भवति मानवः ॥ १३ ॥

मनवांछित फल भोगके वो सत्यनारायणके लोकको प्राप्त होवेगो ॥१२ ॥हे ब्राह्मणो ! यह सत्यनारायणको व्रत हमने तुमसे कह्यो याको करके सब दुःखोंसे छूट जावे है ॥१३ ॥

विशेष करके कलियुगमें सत्यनारायणकी पूजा फल देनेवारी है इन सत्यनारायणको कोई मनुष्य काल कहेंगे कोई सत्य कहेंगे कोई ईश कहेंगे ॥ १४ ॥ कोई सत्यदेव कहेंगे कोई सत्यनारायण कहेंगे, नानारूप धारकर सबको मनवांछित फल देतेहैं ॥ १५ ॥

विशेषतःकलियुगे सत्यपूजा फलप्रदा॥केचित्कालं वदिष्यंति सत्यमीशं तमेव च ॥ १४ ॥ सत्यनारायणं केचित्सत्यदेवं तथापरे ॥ नानारूपधरो भूत्वा सर्वेषामीप्सितप्रदः ॥ १५ ॥ भविष्यतिकलौ सत्यव्रतरुपी सनातनः॥ श्रीविष्णुना धृतं रूपं सर्वेषामीप्सितप्रदम् ॥ १६ ॥ यइदं पठते नित्यं शृणोति मुनिसत्तमाः॥तस्यनश्यंति पापानि सत्यदेवप्रसादतः॥१७

कलियुगमें सत्यव्रतरूपी सनातन सत्यनारायण होवेंगे और सबके मनवांछित फल देनेको श्रीविष्णुने यह सत्यनारायणको रूप धारण कीनो है ॥ १६ ॥ हे मुनिसत्तमो! जो याको

पढ जो याको नित्य सुने वाके सत्यनारायणकी कृपासे सब पाप नाश होजाते हैं ॥ १७ ॥ हे मुनीश्वरो ! श्रीसत्यनारायणको व्रत जिन्होंने पहिले करो है तिनके पीछे जो जन्में हैं

व्रतं यैस्तु कृतं पूर्वं सत्यनारायणस्य च ॥ तेषां त्वपरजन्मानि कथयामि मुनीश्वराः ॥१८ ॥शतानन्दो महाप्राज्ञःसुदामा ब्राह्मणो ह्यभूत् ॥ तस्मि ञ्जन्मनि श्रीकृष्णं ध्यात्वा मोक्षमवाप ह ॥१९॥काष्ठभारवहो भिल्लो गुह राजो बभूव ह ॥तस्मिञ्जन्मनि संसेव्य रामं मोक्षं जगाम वै ॥२० ॥

सो कहते हैं ॥ १८ ॥ महाबुद्धिमान् शतानंद ब्राह्मण सुदामा नामक ब्राह्मण होतो भयो वा जन्ममें श्रीकृष्णजीका ध्यान करके मोक्षको प्राप्त होतो भयो ॥ १९ ॥ काष्ठको बेंचने

वारो वो भिल्ल राजा गुह भयो तिस जन्ममें श्रीरामचंद्रजीकी सेवा करके मोक्षको जातो भयो ॥ २० ॥ उल्कामुख जो महाराज है सो राजा दशरथ भयो अपने इक्ष्वाकुजीके

उल्कामुखो महाराजो नृपो दशरथोऽभवत् ॥श्रीरंगनाथं संपूज्य श्रीवैकुण्ठं तदागमत् ॥ २१ ॥धार्मिकः सत्यसंधश्च साधुर्मोरध्वजोऽभवत्॥ देहार्धं क्रकचैश्छित्त्वा दत्त्वा मोक्षमवाप ह ॥ २२ ॥

कुलगुरु श्रीरंगनाथजी तिनकी सम्यक् प्रकार पूजा करके श्रीवैकुण्ठको जातो भयो ॥ २१ ॥ धर्मात्मा सत्य बोलनेवारो साधु वैश्य मोरध्वज राजा होतो भयो । अपनो आधो शरीर

आरेसे कटशाके ब्राह्मणको दान करके मोक्षको प्राप्त भयो ॥ २२ ॥ तुंगध्वज जो राजा
है वह निश्चय करके स्वायंभुवमनु होतो भयो सबको श्रीवैष्णवभागवत करके श्रीवैकुण्ठ
लोकको जातोभयो ॥ २३ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनारायणव्रतकथायां

तुंगध्वजो महाराजः स्वायंभुवोभवत्किल ॥सर्वान्भागवतान्कृत्वा श्रीवैकु
ण्ठं तदागमत्॥ २३ ॥इतिश्रीस्कंदपुराणे रेवाखण्डे सत्यनाराणकथायां
पंचमोऽध्यायः॥ ५ ॥ ॥ (वन्दे वेदांतकर्पूरचामीकरकरण्डकम् ॥ रामा
नुजार्यमार्याणां चूडामणिमहर्निशम् ॥ १ ॥)

नारायणशास्त्रिविरचितायां भाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥ वेदांतरूप कर्पूरके जो
सुवर्णके डब्बारूप बडोंके शिरोमणिरूप ऐसे जो रामानुजस्वामी तिनको नित्य हम
प्रणाम करे हैं ॥ १ ॥ शुभम् ॥

इदं पुस्तकं क्षेमराज-श्रीकृष्णदास-श्रेष्ठिना स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर"
स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशितम्।

संवत् १९७९, शके १८४४.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, निज
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

॥ इति सत्यनारायणकथा भाषाटीकासमेता समाप्ता ॥